ISSN: 0973-0583

सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और प्रवासन के संबंधों का अध्ययन

कंचन कुमार
शोधार्थी, शोध एवं शैक्षिक प्रशिक्षण विभाग, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना
डॉ० सुशील कुमार सिंह
सह-प्राध्यापक, संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन, दीघा, पटना

शोध-सार

शिक्षा मानव सभ्यता के विकास की आधारशिला है, जो व्यक्ति को पशुता से मानवता की ओर अग्रसर करती है। यह केवल आत्म विकास का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की समरसता, समृद्धि और सशक्तीकरण का मूल आधार है। विशेषकर सामाजिक रूप से वंचित समुदायों के लिए शिक्षा जीवन की दशा और दशा बदलने का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है। वतिमान शोध का उद्देश्य सामाजिक रूप से वंचित प्रवासित एवं अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है, ताकि प्रवासन के कारण उनकी शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव को समझा जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में बिहार राज्य के बाढ़ प्रभावित पाँच जिलों के चयनित प्रखंडों से कुल 471 विद्यार्थियों को न्यायदर्श के रूप में चुना गया, जिनमें 263 प्रवासित एवं 208 अप्रवासित विद्याथी शामिल थे। आंकड़ों का संग्रह स्वनिर्मित व प्रमापीकृत शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण एवं प्रश्नावली द्वारा किया गया तथा सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु t-मान, मध्य मान और मानक विचलन की गणना की गई। परिणामों से ज्ञात हुआ कि लिंग और विद्यालय के प्रकार के आधार पर प्रवासित व अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि विद्यालय के क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर इनकी उपलब्धियों में सार्थक अंतर पाया गया। यह अंतर इस ओर संकेत करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति तुलनात्मक रूप से बेहतर है या प्रवास का प्रभाव शहरी क्षेत्रों में अधिक है। यह शोध सामाजिक रूप से वंचित समुदायों की शैक्षिक स्थिति को प्रवासन के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है, जिससे नीति निर्धारकों को लक्षित उपायों के निर्माण में सहायता मिल सके। साथ ही, यह शोध प्रवासन की जटिलताओं, उसके कारणों और प्रभावों के समग्र अध्ययन की दिशा में भी एक सार्थक पहल है।

मुख्य शब्द : सामाजिक रूप से वंचित, प्रवासित, अप्रवासित, शैक्षिक स्थिति

Received : 10/6/2025 **Acceptance : 15/7/2025**

शिक्षा के बिना मनुष्य जैसा श्रेष्ठ प्राणी बनना संभव नहीं है। मानव विकास के इतिहास में पशु से मनुष्य बनने की प्रक्रिया इसी शिक्षा से शुरू होती है। जैविक पूर्ति और अधारभूत भौतिक साधन के बाद मनुष्य को अपनी सुरक्षा की दरकार होती है। यह सुरक्षा की जरूरत ही समाज को जन्म देता है और यही समाज मानव सभ्यता के विकास का आधार है। मानव इस सभ्यता के विकास और उनके समाज की उन्नति शिक्षा के बिना संभव नहीं है। शिक्षा न सिर्फ व्यक्तिगत बल्कि यह समाज की भी मूलभूत आवश्यकताओं में एक है। जिस तरह व्यक्ति की उन्नत ही समाज की उन्नति है। उसी तरह व्यक्ति के लिए शिक्षा उसके समाज की शिक्षा है। व्यक्ति और समाज दोनों के लिए शिक्षा सिर्फ साधन नहीं बल्कि एक साध्य भी है। इसे प्राप्त करना व करवाना मनुष्य व समाज दोनों का ध्येय है। समाज की संरचना की हर इकाई का विशेष महत्व है। चूँकी अन्य संस्कृतियों की तुलना में भारतीय समाज और इसकी संस्कृतियाँ ज्यादा विविधता ली हुई हैं। समाज की जातियों, वर्गों, धर्मों और विभिन्न वैचारिक सम्प्रदायों में बँटे हुए हैं। आर्थिक, सामाजिक और लैंगिक भिन्नता व असमानता के कारण भी यह समाज कई स्तरों में बँटे हुए हैं। सबकी जरूरतों, अधिकारों और भावनाओं का ध्यान रखना हमारी सामूहिक और नैतिक जिम्मेदारी है। समाज के हर इकाई के साथ समानता और न्याय सम्मत व्यवहार हो; यह हम सबकी जिम्मेवारी है। पर यह तब

तक संभव नहीं है जब तक समाज के हर इकाई तक शिक्षा समान रूप से पहुचे।

भारतीय समाज में समाज के कुछ वर्गों या समूहों की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्थिति बिल्कुल ही दयनीय है। खासकर सामाजिक रूप से वंजित अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग आदि लोगों की जीवन-पस्थिति आजादी के इतना साल बाद भी बहुत अच्छी नही है। अपनी जीविका या रोजी-रोटी के साथ अपने सामाजिक अस्तित्व के लिए संघर्ष करते इनलोगों लोगों का जीवन सामान्य लोगों से काफी भिन्न हैं। इनके पास न समुचित शिक्षा के साधन हैं और न ही वैसी परिस्थितियां। इनमें से अधिकांश लोगों का जीवन रोटी, कपड़ा और मकान तक सीमित हैं। इनके लिए बीमारी और कोई भी प्राकृतिक या अप्राकृतिक आपदा रीढ़ की हड्डी टूटने के सामान है। विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों से घिरे इन लोगों के जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। अगर सामाजिक रूप से वंचित ये लोग शिक्षा से वंचित रह गए तो दर्द एक लम्बे समय तक बना रहेगा। इनके लिए सामान्य जीवन जीना दूभर हो जाएगा। उपरोक्त सभी समस्याओं में प्रवासन आज एक बड़ी और सामान्य समस्या है। प्रवासन से एक बहुत बड़ी आबादी प्रभावित है। खासकर सामाजिक रूप से वंचित ऐसे लोग जो प्राकृतिक या अप्राकृतिक आपदाओं, रोजगार या अन्य कारणों के चलते किसी न किसी रूप में प्रवासित हैं।

समस्याओं के आधारभूत संदर्भ

भारत की सामाजिक संरचना अतीत काल से ही वर्णाश्रित व्यवस्था पर आधारित थी। आजादी के पूर्व आजादी के कुछ वषों बाद तक भी सामाजिक व आर्थिक रूप से कमजोर लोगों का जीवन में कोई विशेष बदलाव नहीं आया। सामाजिक बहिष्कार एवं आर्थिक तंगी के कारण ये दबे-कुचले लोगों में मानसिक व शारीरिक दुर्बलता के साथ-साथ स्वयं के प्रति एक हीन भावना का स्थायी बीजारोपण भी हुआ। एक लंबे समय तक इस मानसिक गुलामी ने उन्हें समाज की मुख्य धारा से अलग रखा। ये अपने जीवन के दायरे में रोटी और कपड़ा से आगे नहीं सोच पाए। दूसरे की जमीन पर बांस, फूस और टाटी के सहारे मजदूरी करते जीवन बसर करते रहे। आजादी के इतने सालों बाद भी इनका वर्तमान अभी भी रोटी, कपड़ा और मकान तक केन्द्रित हैं। 21वीं सदी के इस वैश्विक स्वरूप में भी एक अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा से वे आज भी वंजित हैं।

सामाजिक और आर्थिक हाशिए पर खड़े इस वंचित समाज पर प्रवासन का दंश उनके विकास में एक बहुत बड़ी बाधा है। रोजगार, प्राकृतिक आपदा या अन्य किसी कारणवश हुए प्रवासन से इनके बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि पूणितः या अंशतः प्रभावित होती है।

अध्ययन का औचित्य

सामाजिक रूप से वंचित होना स्वयं में एक समस्या तो है ही; एक त्रासदी भी है। उसमें भी अगर निरंतर अनैक्षिक प्रवासन का अस्थिर जीवन उसकी मजबूरी बन जाए तो यह त्रासदी और भी भयावह हो जाती है। इस त्रासदी में समूह-विशेष या व्यक्ति-विशेष का हर विकास प्रभावित होगा। सामाजिक रूप से वंचित परिवार के विद्यार्थियों का शैक्षिक रूप से पिछड़ना उसे समाज की मुख्यधारा से और भी अलग-थलग कर देगी। शैक्षिक उपलब्धि पर प्रवासन के प्रभाव का अध्ययन का महत्त्व इस रूप में है कि सामाजिक जटिलताओं, जातीय संघर्षो या आपदायिक घटनाओं के कारण प्रवासित लोगों की वर्तमान समस्याओं का सामायिक और सार्वभौमिक समाधान ढूँढा जा सके। साथ ही प्रवासन के विभिन्न रूपों एवं कारणों को समग्रता से समझने में भी यह शोध सहायक होगा। प्रवासन के कारण सामाजिक रूप से वंचित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का समग्र अध्ययन से उनकी शिक्षा हेतु विशेष साधन-संसाधन एवं उपायों के चयन में यह शोध सहायक है।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. कक्षा के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना
2. लिंग के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
3. विद्यालय के क्षेत्र के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।

शून्य परिकल्पना :

1. कक्षा के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में साथिक अंतर नहीं है।
2. लिंग के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
3. विद्यालय के क्षेत्र के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में साथिक अंतर नहीं है।

जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध के अध्ययन में बिहार राज्य के पटना, वैशाली, खगड़िया, मधेपुरा और सुपौल जिला क्रमशः दानापुर, राघोपुर, परबता, चौसा और मरौना प्रखंड के बाढ़ प्रभावित पंचायतों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में वर्तमान में 10वीं कक्षा में पढ़ रहे या उत्तीर्ण विद्यार्थी व पढ़ाई छोड़ चुके प्रवासित एवं अप्रवासित विद्यार्थी इस शोध की जनसंख्या है।

न्यायदर्श :

इस शोध में स्तरीयकृत प्रतिचयन तकनीक द्वारा कुल जनसंख्या में से 471 विद्यार्थियों को याद्रीक्षिक प्रजचियन विधि से न्यायदर्श के रूप में चयनित किया गया जिसमें प्रवासित विद्यार्थियों की संख्या 263 एवं अप्रवासित विद्यार्थियों की संख्या 208 हैं।

आंकड़ों का संग्रहण एवं शोध विधियाँ :

स्वनिर्मित एवं प्रमापीकृत शैक्षिक-उपलब्धि परीक्षण सह प्रश्नावली एवं वर्णनात्मक सर्वे विधि का प्रयोग।

प्रदतों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या :

प्रदतों के विश्लेषण हेतु मध्य मान, मानक विचलन और t मान की गणना की गयी। जिसमे दो चरों के बीच के संबंधों को व सार्थकता का आकलन किया गया।

शून्य परिकल्पना :

1. कक्षा के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या -1

कक्षा के आधार पर प्रवासित व अप्रवासित विद्यार्थियों का मध्य मान, मानक विचलन, t का मान का परिणाम

कक्षा	प्रतिदर्श की संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	t-मान
X	404	12.21	4.264	0.93
XI	67	12.67	4.032	

परीक्षण से प्राप्त परिणामों का सारणी मान से तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सामाजिक रूप से वंचित विद्यार्थियों में कक्षा के आधार पर उसकी शैक्षिक उपलब्धि का प्राप्त t मान 0.93 है, जो तालिका मान 1.96 से कम है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत किया जाता है। परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि कक्षा के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

शून्य परिकल्पना 2. लिंग के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या -2

लिंग के आधार पर प्रवासित व अप्रवासित विद्यार्थियों का मध्य मान, मानक विचलन, t-मान का परिणाम

लिंग	प्रतिदर्श की संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	t-मान
पुरूष	180	12.41	4.099	0.542
महिला	291	12.19	4.315	

परीक्षण से प्राप्त परिणामों का सारणी मान से तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सामाजिक रूप से वंचित विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर उसकी शैक्षिक उपलब्धि का प्राप्त t मान 0.542 है, जो तालिका मान 1.96 से कम है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत किया जाता है। परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

शून्य परिकल्पना-३

विद्यालय के क्षेत्र के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या -३

विद्यालय के क्षेत्र के आधार पर प्रवासित व अप्रवासित विद्यार्थियों का मध्य मान, मानक विचलन, t–मान का परिणाम

विद्यालय क्षेत्र	केप्रतिदर्श की संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	t-मान
ग्रामीण	126	15.88	3.216	14.008
महिला	345	10.96	3.768	

परिक्षण से प्राप्त परिणामों का सारणी मान से तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सामाजिक रूप से वंचित विद्यार्थियों में विद्यालय के क्षेत्र के आधार पर उसकी शैक्षिक उपलब्धि का प्राप्त t मान 14.008 है, जो तालिका मान 1.96 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत किया जाता है। परिणाम स्वरुप कहा जा सकता है कि विद्यालय के क्षेत्र के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित और अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष :

आंकड़ों के प्राप्त परिणामों के अनुसार लिंग के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित या अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यहाँ परिकल्पना -1. स्वीकृत हुई। पुनः विद्यालय के प्रकार के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित व अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। यहाँ भी परिकल्पना-2 स्वीकृत हुई जब तीसरे उद्देश्य और परिकल्पना पर हम गौर करते हैं तो पता चलता है कि विद्यालय के क्षेत्र के आधार पर सामाजिक रूप से वंचित माध्यमिक स्तर के प्रवासित व अप्रवासित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अर्थात् परिकल्पना-3 अस्वीकृत हुई।

भावी शोध हेतु सुझाव

जनसंख्या क्षेत्र, विषय की व्यापकता और संवेदनशीलता के आधार पर अनुसधांन करते समय विभिन्न अनुभव निम्नलिखित है।

सुझावः

1. यह अनुसंधान न सिर्फ पांच जिले की जनसंख्या तक के लिए प्रायोजित हो सकती है बल्कि पूरे राज्य व देश स्तर पर इस अनुसंधान की आवश्यकता है।
2. शिक्षा के सन्दर्भ में प्रवासन के विभिन्न कारणों व प्रभाव की संवेदनशीलता के कारण इस अनुसंधान को और व्यापक स्तर पर किया जा सकता है।
3. यह अनुसंधान विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों एवं अनुसूचित जनजातियों एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति जानने के लिए भी किया जा सकता है।
4. यह अनुसंधान प्रवासन का न सिर्फ शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव तक के अध्ययन तक सीमित है बल्कि प्रवासित जीवन के विभिन्न आयामों पर भी इसका अध्ययन अपेक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. गौड़ सुनीता, गौड़ के0सी0 (2020), वंचित वर्ग के बालकों का शैक्षिक उन्नयन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, https://www-ijcrt-org

2 जोशी अनिल (2018), प्रवासी लेखनः नयी जमीन नया आसमान, नयी दिल्लीः वाणी प्रकाशन.

https://books-google-co-in/books\id/cU9iDwAAQBAJ & printsec

3 रॉय इन्द्रजीत (2016), रूलर अर्बन माइग्रेशन इन बिहार, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, इंटरनेशनल ग्रोथ सेंटर

https://www-theigc-org/project/rular&urban&migration&in&bihar/

4 सेंसेस रिपोर्ट (2011), डाटा ऑन माइग्रेशन 2011, ऑफिर्स ऑफ रजिस्टार जनरल एंड सेन्सस कजमशनर - https://www-india-gov-in/my&government/documents/census&report

5 रिपोर्ट ऑफ नीति आयोग (2021), सोसिअली डिसएडवांटेड ग्रुप, ch &14 - https://www-niti-gov-in

6. डेका, ए.के (2011), माइग्रेशन एंड कनफ्लिक्ट, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहर लाल नेहरु यूनीवर्सिटी, नई दिल्ली .

* * *